भारत-जर्मनी संबंधों में एक लोकतांत्रिक और रणनीतिक असंगति

लेखक - शांति मैरियट डिसूज़ा (प्रोफ़ेसर)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

10 मई, 2022

क्या भारत के प्रधानमंत्री की जर्मनी यात्रा ने यूक्रेन पर भारत के रुख के बारे में धारणा को बदल दिया है? इस प्रश्न का काफी महत्त्वपूर्ण महत्त्व है।

2 मई को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की जर्मनी यात्रा एक महत्त्वपूर्ण समय पर हुई, जिसे चल रहे यूक्रेन युद्ध द्वारा आकार दिया गया है। आजकल, नई दिल्ली अपने मुखर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पर रही है। भले ही संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय राष्ट्रों ने मास्को पर प्रतिबंध लागू कर दिए हों और यूक्रेन को सैन्य सहायता प्रदान की हो, लेकिन नई दिल्ली ने इन दोनों का साथ देने से इंकार कर दिया है। इसने न केवल युद्ध पर महत्त्वपूर्ण मतों पर संयुक्त राष्ट्र (यूएन) में भाग लेने से लेकर मास्को की निंदा करने से परहेज किया है, बल्कि सस्ते कच्चे तेल के आयात को बढ़ाने के लिए मास्को के साथ जुड़ना भी जारी रखा है।

रूस के साथ इसके लंबे समय से चले आ रहे और पारंपरिक रक्षा संबंध बरकरार हैं। हालाँकि, इस तरह के कदमों ने भारत के लिए थोड़ी मुश्किलें बढ़ाई हैं और पश्चिम की कुछ आलोचनाओं को आकर्षित किया है, लेकिन नई दिल्ली जोर देकर कहते आया है कि युद्ध पर उसकी स्थिति गैर-पक्षपाती है और उसके सहयोगियों तथा मित्रों द्वारा इसकी सराहना की जानी चाहिए।

एक सूक्ष्म पहल

हालाँकि, भारत के विदेश मंत्री के मुखर मीडिया और सम्मेलन के बयानों के बावजूद, भारत के रणनीतिक हलकों में यह मान्यता बढ़ रही है कि नई दिल्ली को यूरोप के साथ अपने दृष्टिकोण में और अधिक सूक्ष्मता लाने की आवश्यकता है। भारत के कद को देखते हुए, पश्चिम द्वारा पूरी तरह से अलग-थलग होना इतना आसान नहीं है। हालाँकि, विश्व मंच पर और विशेष रूप से भारत के साथ सीमा पर चीन के साथ, नई दिल्ली को अपने राष्ट्रीय हितों और विदेश नीति में रणनीतिक स्वायत्तता को आगे बढ़ाने के अपने अधिकार पर जोर देते हुए एक नाजुक संतुलन अधिनियम का प्रबंधन करने की आवश्यकता है। प्रधानमंत्री मोदी के यूरोप के तीन देशों के दौरे (2-4 मई) को पृष्ठभूमि में इन कारकों के संदर्भ में देखने की जरूरत है।

रूसी गैस और कच्चे तेल पर इसकी महत्त्वपूर्ण निर्भरता के बावजूद, यूक्रेन में मास्को के कदमों की निंदा यूरोप में एकमत के करीब है। आश्चर्य नहीं कि संयुक्त राष्ट्र के वोटों में भारत की अनुपस्थिति और रूस के साथ अपने संबंधों को जारी रखने से जर्मनी पर असर पड़ा है। निजी और सार्वजनिक चर्चाओं में, एक प्रमुख शक्ति और सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में भारत की भूमिका को सबसे आगे लाया जा रहा है और इस बात की अपेक्षा बढ़ रही है कि भारत को रूस पर अपनी

स्थिति से बदलाव करने और यूरोपीय देशों के साथ हाथ मिलाने की जरूरत है। लोकतंत्र की रक्षा में यू.एस. इन अपेक्षाओं और दबाव की रणनीति के बीच, क्या प्रधानमंत्री की जर्मनी यात्रा ने धारणा को बदलने और बढ़ती हुई खाई को पाटने में मदद की है, यह देखना महत्त्वपूर्ण होगा।

प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा जर्मन चांसलर ओलाफ स्कोल्ज के पहले कार्यकाल के दौरान हुई थी। प्रधानमंत्री की यात्रा से पहले, चांसलर ने एशिया की अपनी पहली यात्रा में जापान का दौरा किया था। इसे जर्मनी के भारत-प्रशांत दिशा-निर्देशों के परिणाम के रूप में अन्य एशियाई शक्तियों तक पहुँचने और लोकतांत्रिक गठबंधनों पर निर्माण के संकेत के रूप में माना जाता है। इन दोनों बैठकों ने जर्मनी में कुछ विश्लेषकों के बीच एक लोकतांत्रिक लाभांश की उम्मीदों को जन्म दिया था, जिससे दोनों देशों के बीच रूस पर विचारों और संभवतः नीतियों का अभिसरण हो सकता है। जैसा कि यूक्रेन युद्ध से साबित हुआ है, नई दिल्ली ने जर्मनी, जापान और भारत को परिभाषित करने वाले सामान्य लोकतांत्रिक मूल्यों द्वारा आकार वाली नीति को आगे बढ़ाने के लिए अपने हितों को प्राथमिकता देना चुना है।

चीनी कारक

वास्तव में, कई वर्षों से, भारतीय नीतियों ने पड़ोस में लोकतंत्र को बढ़ावा देने का विरोध किया है और इसके बजाय वास्तविक शक्तियों से निपटने का विकल्प चुना है। अफगानिस्तान, जहाँ भारत अभी भी तालिबान के साथ व्यापार करने के लिए अनिच्छुक है, शायद एक विचलन है। दूसरी ओर, म्यांमार की जनता के प्रति भारत की नीति इसी व्यावहारिकता से परिभाषित होती है। इसलिए, लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए हितों के अभिसरण का लोकतांत्रिक तर्क शायद ही भारत और जर्मनी के बीच एक मजबूत बंधन है। विशेष रूप से इंडो-पैसिफिक में चीन के उदय का मुकाबला करने के लिए भू-राजनीतिक अभिसरण लोकतांत्रिक मानदंडों और मूल्यों की रक्षा के वैचारिक और नियामक पहलुओं के बजाय एक अधिक अनिवार्य आवश्यकता प्रतीत होती है।

यूरोप के साथ जुड़ाव

जहाँ तक सामान्य रूप से यूरोप और विशेष रूप से जर्मनी के साथ उसके संबंध हैं, तो यहाँ नई दिल्ली का उद्देश्य बहुआयामी है। अब तक, यूरोप ने रूस और यूक्रेन पर अपनी स्थिति को संशोधित नहीं किया है और हिंसा की अपनी स्पष्ट निंदा को रेखांकित करना जारी रखा है।

हालाँकि, पश्चिम के विपरीत, भारत यह स्पष्ट करता है कि भू-राजनीतिक प्रासंगिकता के एकान्त मुद्दे पर अपनी स्थिति के बावजूद, जर्मनी, फ्रांस और डेनमार्क जैसे देशों के साथ द्विपक्षीय जुड़ाव शीर्ष पर बना हुआ है। इस तरह की नीति का उद्देश्य स्पष्ट रूप से खुद को अलग-थलग नहीं बल्कि एक स्विंग पावर के रूप में पेश करना है जो कि भू-राजनीतिक और कूटनीतिक शतरंज की बिसात पर चतुराई से चल सकती है।

इस दिशा में, छठे भारत-जर्मनी अंतर-सरकारी परामर्श (आईजीसी) का आयोजन, एक द्विवार्षिक प्रारूप, जिसे भारत जर्मनी के साथ आयोजित करता है, ने महत्त्वपूर्ण ध्यान आकर्षित किया है। भारत जर्मनी के साथ 'दीर्घकालिक वाणिज्यिक संबंधों' को महत्त्वपूर्ण महत्व देता है, जो 'रणनीतिक साझेदारी' का एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ है, जिसे दोनों देशों ने सन् 2000 में दर्ज किया था।

पूर्ण संबंधों के लिए जगह

यह एक सच्चाई है कि भारत-जर्मनी संबंधों ने अभी तक अपनी पूरी क्षमता हासिल नहीं की है। इसका एक कारण, संभवत:, एक दूसरे की सामरिक संस्कृतियों और घरेलू राजनीति की समझ की कमी है। यह संदेहास्पद है कि प्रधानमंत्री की यात्रा ने उसमें कोई बदलाव किया है या नहीं, विशेष रूप से किसी भी मीडिया बातचीत और रणनीतिक संचार के अभाव में। जर्मनी ने इस साल जून में जी-7 की बैठक में प्रधानमंत्री को आमंत्रित किया है, जिसे भारत को रूस पर अपनी स्थिति से दूर करने के प्रयास के रूप में माना जा रहा है।

हालाँकि, यह प्रयास सफल नहीं हो सकता है, यह निश्चित रूप से अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में उभरती बहुध्रुवीयता के लिए एक संकेतक है, जो जर्मनी और भारत जैसी प्रमुख शक्तियों को अन्य क्षेत्रों में शांति और स्थिरता लाने में बड़ी भूमिका निभाने के लिए जगह प्रदान करता है, विशेष रूप से अफगानिस्तान और भारत-प्रशांत में। बदलते भू-राजनीतिक गठजोड़ और पुनर्गठन के समय में, भारत और जर्मनी नई विश्व व्यवस्था को आकार देने में महत्त्वपूर्ण साबित हो सकते हैं।

जीएस वर्ल्ड टीम इनपुट

IN THE NEWS

भारत- जर्मनी संबंध

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने यूरोप के तीन देशों की यात्रा के पहले पड़ाव में जर्मनी का दौरा किया था। उन्होंने बर्लिन में जर्मन चांसलर ओलाफ शोल्ज के साथ द्विपक्षीय वार्ता की।
- साथ ही प्रधानमंत्री ने शोल्ज के साथ छठे भारत-जर्मनी इंटर गवर्नमेंटल कंसल्टेशन (आईजीसी) में भी भाग लिया है।
- इस बीच, दोनों देशों ने सतत विकास पर केंद्रित कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए, जिसके तहत स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए भारत को सन् 2030 तक 10.5 अरब डालर की सहायता मिलेगी।

जर्मनी के लिए भारत का महत्त्व

- *मुक्त और समावेशी व्यापार:* जर्मनी के लिए यह महत्वपूर्ण है कि इंडो-पैसिफिक के माध्यम से व्यापार मार्ग खुले रहें और विवादों को अंतर्राष्ट्रीय कानून के आधार पर शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाया जाए। भारत एक समुद्री महाशक्ति है और मुक्त तथा समावेशी व्यापार का प्रबल समर्थक है- और इसलिए, उस मिशन का एक प्राथमिक भागीदार है।
- *इंडो-पैसिफिक में पदचिह्न:* जर्मनी ने महसूस किया है कि दुनिया का राजनीतिक और आर्थिक गुरुत्वाकर्षण केंद्र इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में स्थानांतरित हो रहा है। इसलिए, यह भारत के साथ एक रणनीतिक साझेदार और लंबे समय से चले आ रहे लोकतांत्रिक मित्र के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराना चाहता है।

भारत-प्रशांत क्षेत्र जर्मनी और यूरोप के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

- *जनसंख्या:* इंडो-पैसिफिक क्षेत्र वैश्विक आबादी का लगभग 65% और दुनिया के 33 मेगासिटी में से 20 का घर है।
- *अर्थव्यवस्था:* इस क्षेत्र का वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 62% और दुनिया के व्यापारिक व्यापार का 46% हिस्सा है। 20% से अधिक जर्मन व्यापार इंडो-पैसिफिक पड़ोस में आयोजित किया जाता है।

- *जलवायु सहयोग:* भारत-प्रशांत क्षेत्र भी सभी वैश्विक कार्बन उत्सर्जन के आधे से अधिक का स्रोत है। यह भारत जैसे क्षेत्र के देशों को जलवायु परिवर्तन और सतत ऊर्जा उत्पादन और खपत जैसी वैश्विक चुनौतियों से निपटने में प्रमुख भागीदार बनाता है।
- जर्मनी महाराष्ट्र के धुले (सकरी) में एक विशाल सौर संयंत्र के निर्माण का समर्थन कर रहा है। 125 मेगावाट की क्षमता के साथ, यह 2,20,000 घरों की सेवा करता है और 155,000 टन की वार्षिक CO_2 बचत उत्पन्न करता है।

संस्कृति

- भारत और जर्मनी में अकादमिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की एक लंबी परंपरा रही है।
- मैक्समूलर उपनिषदों एवं ऋग्वेद का अनुवाद और प्रकाशन करने वाले इंडो-यूरोपीय भाषाओं के पहले विद्वान थे।
- भारतीय दर्शन और भाषाओं में जर्मन रुचि के परिणामस्वरूप 1818 में बॉन विश्वविद्यालय में इंडोलॉजी के पहले चेयर की स्थापना हुई।
- भारत सरकार ने अब तक जर्मन विश्वविद्यालयों में भारतीय अध्ययन के लिए 31 शॉर्ट टर्म रोटेटिंग चेयर का वित्त पोषण किया है।
- जर्मनी में भारतीय नृत्य, संगीत और साहित्य के साथ-साथ चलचित्र और टीवी उद्योग में रुचि बढ़ रही है।
- भारतीय फिल्में और कलाकार नियमित रूप से बर्लिन अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव और जर्मनी के अन्य हिस्सों में आयोजित भारतीय फिल्म समारोहों में भाग लेते हैं।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

प्र. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. भारतीय नौसेना और जर्मन नौसेना ने पहली बार 2008 में संयुक्त अभ्यास किया था।
2. जर्मनी अप्रैल, सन् 2000 के बाद से भारत में 7वाँ सबसे बड़ा प्रत्यक्ष विदेशी निवेशक है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(क) केवल 1 (ख) केवल 2

(ग) 1 और 2 दोनों (घ) न तो 1, न ही 2

Expected Question (Prelims Exams)

Q. Consider the following statements-

1. Indian Navy and German Navy conducted joint exercises for the first time in 2008.
2. Germany is the 7th largest foreign direct investor in India since April 2000.

Which of the above statements is/are correct?

(a) Only 1 **(b)** Only 2

(c) Both 1 and 2 **(d)** Neither 1, nor 2

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्र. यूक्रेन-रूस युद्ध के अनिश्चितता के चरण में, भू-राजनीतिक क्रम में भारत-जर्मनी संबंधों की प्रासंगिकता की व्याख्या करें। (250 शब्द)

Q. In the uncertain phase of the Ukraine-Russia war, explain the relevance of Indo-German relations in the geopolitical order. (250 Words)

नोट :- अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रख कर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्त्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।